Date
Page 1

जैन दर्शन के स्याद्वाद की व्याख्या करें ?

जैन दार्शनिकों का मत है कि जीवन उत्पन्न
क्योंकि कुछ कर्म पुद्गल पूर्ण ज्ञान की प्र
में बाधा उत्पन्न करते हैं। साधारण व्यक्ति
सांसारिक अवस्था में जो ज्ञान प्राप्त करता
वह कर्म पुद्गलों के कारण अपूर्ण, सापेक्ष तथ
एकांगी होता है। कारण यह है कि साधारण
व्यक्ति किसी वस्तु को एक समय में एक ही
दृष्टि से देख सकते हैं इसलिए उस वस्तु
कुछ ही धर्मों को जान सकता है परिणामस्व
वस्तु के सन्दर्भ में जो कुछ कहा जाता है
वह अपूर्ण, सापेक्ष तथा एकांगी होने के क
प्रमाणिक ज्ञान की कोटि में नहीं आता है।

जैन दार्शनिकों का मत
कि यदि इस सापेक्ष, एकांगी ज्ञान को प्रमाणि
बनाना है, तो ऐसे प्रत्येक सांसारिक ज्ञान के
पूर्व हमें स्याद शब्द का प्रयोग करना अनिवा

जैन दार्शनिकों के अनुसार किसी वाक्य
पूर्व स्याद शब्द का प्रयोग यह संकेत कर
है कि इस शब्द के साथ प्रयुक्त कथन क
सत्यता संदर्भ विशेष पर निर्भर है, इसलिए
यह कथन सापेक्षिक रूप से सत्य है। अ
शब्दों में स्याद् से युक्त कथन, काल, स्थान
तथा दृष्टिकोण विशेष से आंशिक सत्य है,
क्योंकि किसी अन्य दृष्टिकोण से कोई अन
कथन भी उस वस्तु के बारे में प्रस्तुत क
जा सकता है, जो परस्पर भिन्न होते हुए भ
अपने प्रसंग के अनुसार उस वस्तु के सं
में आंशिक रूप से सत्य हो सकता है।

जैन दार्शनिकों के अनुस
किसी भी सांसारिक ज्ञान से पूर्व स्याद श
का प्रयोग नहीं करना एकांगी मत के समत
है साथ ही अप्रमाणिक है। उदाहरणार्थ –
कुछ अंधे हाथी का आकार जानना चाहते

में वर्णित किया। जैन दार्शनिको के अनुस
हाथी के स्वरूप के सन्दर्भ में प्रत्येक अन्
का मत एकान्तिक था क्योंकि प्रत्येक ने हाथी
के किसी एक ही पक्ष का ही वर्णन किय
था। उनमें हाथी के स्वरूप को लेकर परस्पर
मतभेद भी पैदा हो गया था, किन्तु जैसे ह
अन्धों को यह बताया गया कि प्रत्येक ने
हाथी के अलग-अलग अंगों को स्पर्श किया
है, तो उनका मतभेद दूर हो गया।

स्याद्वाद सप्तभंगी नय क
आधार है। स्यादवाद के अन्तर्गत जैन दार्शनि
की मान्यता है कि सप्तभंगी नय के अन्तर्गत
सात प्रकार के भेदो को स्वीकार किया
गया है। जिनका वर्णन निम्नलिखित है —

स्याद अस्ति

स्याद् अस्ति च अव्यक्तव्यम् च

स्याद् नास्ति च अव्यक्तव्यम् च

स्याद् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्यम् च